वन्य प्राणियों की संख्या 40 साल में आधी हुई

वन्य जीवन को लेकर चिंता तो बहुत दिखाई जाती है मगर मैदानी हकीकत कुछ और ही किस्सा बयां करती है। द्विवार्षिक *लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट* के मुताबिक 40 साल पहले जितने वन्य प्राणी थे उसमें से आधे ही बचे हैं।

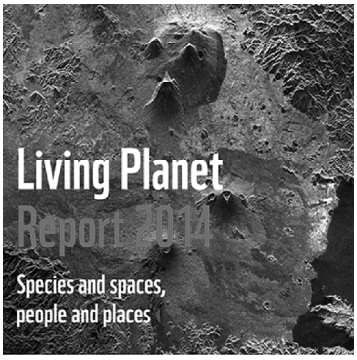

लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट विश्व प्रकृति निधि (डब्लू.डब्लू.एफ.) द्वारा हर दो वर्ष में जारी की जाती है। इस वर्ष की रिपोर्ट का फोकस दुनिया भर की 10,000 रीढ़धारी जंतु प्रजातियों पर था। 1970 से 2010 के बीच इन कशेरुकी जंतुओं की आबादी में बदलाव का एक अनुमान इस रिपोर्ट में लगाया गया है। रिपोर्ट का अनुमान है कि इन चार दशकों में मछलियों, पक्षियों, स्तनधारियों, उभयचरों और सरिसृपों की संख्या में 52 प्रतिशत की गिरावट आई है।

सबसे तेज़ गिरावट लैटिन अमेरिका में देखी गई जहां वन्य जीवों की आबादी में पूरे 83 प्रतिशत की कमी आई है। मीठे पानी में रहने वाले जीव भी सुरक्षित नहीं रहे हैं और उनकी आबादी में 76 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है।

लंदन की प्राणि विज्ञान सोसायटी के जीव विज्ञान संस्थान के सैम टर्वे के मुताबिक प्रजातियों की संख्या में गिरावट और उनके विलुप्तीकरण का सबसे बड़ा कारण पर्यावरण पर मनुष्यों का दबाव है। यह दबाव स्थानीय भी है और अंतर्राष्ट्रीय भी। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्थानीय स्तर पर खेती या बहुराष्ट्रीय खनिज व इमारती लकड़ी के व्यापार के कारण कई प्रजातियों के प्राकृत वास तबाह हुए हैं और ये प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर पहुंच गई है या इनकी आबादी बहुत कम हो गई है। टर्वे का कहना है कि मामला बहुत चुनौतीपूर्ण और पेचीदा है और इसके समाधान भी काफी पेचीदा हैं क्योंकि यह एक-दो स्थानों की नहीं बल्कि वैश्विक परिघटना है। रिपोर्ट की भूमिका में डब्लू.डब्लू.एफ. के निदेशक ने उम्मीद जताई है कि हमारी पीढ़ी जिस अवसर का लाभ न उठा सकी, आने वाली पीढ़ी उससे सबक लेगी और इतिहास के इस विनाशकारी अध्याय को बंद करेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***